इकाई - I

1. बरसते बादल

- सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण

क्या गाती हो, किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी।
प्यासी धरती देख माँगती,
हो क्या मेघों से पानी?

प्रश्न

1. मीठे गीत कौन गाती है?
2. प्यासी धरती पानी किससे माँगती है?
3. बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं। कैसे?

उद्देश्य

प्रकृति के प्रति काव्य रचनाओं के प्रोत्साहन के साथ-साथ सौंदर्यबोध कराना, मनोरंजन की भावना जगाना और प्रकृति संरक्षण के लिए प्रेरित करना इसका उद्देश्य है।

विधा विशेष

'बरसते बादल' कविता पाठ है। कविता भावनाओं को उदात्त बनाने के साथ-साथ सौंदर्यबोध को भी सजाती-संवारती है। प्रस्तुत कविता नाद (ध्वनि) के साथ गेय योग्य है। इसमें अनुप्रास का सुंदर प्रयोग है।

कवि परिचय

प्रकृति के बेजोड़ कवि माने जाने वाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 में अल्मोड़ा में हुआ। साहित्य लेखन के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी', 'सोवियत रूस' और 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' दिया गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- *वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद तथा चिदंबरा* आदि। इनका निधन सन् 1977 में हुआ।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *वर्षा ऋतु हमेशा से सबकी प्रिय ऋतु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुंदरता देखने लायक़ होती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है।इसी सौंदर्य का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है।*

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के।।

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
'म्यव-म्यव' रे मोर 'पीउ' 'पीउ' चातक के गण।
उड़ते सोनबालक, आर्द-सुख से कर क्रंदन,
घुमड़-घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अंतर।
धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर,
रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि थर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानंदन पंत

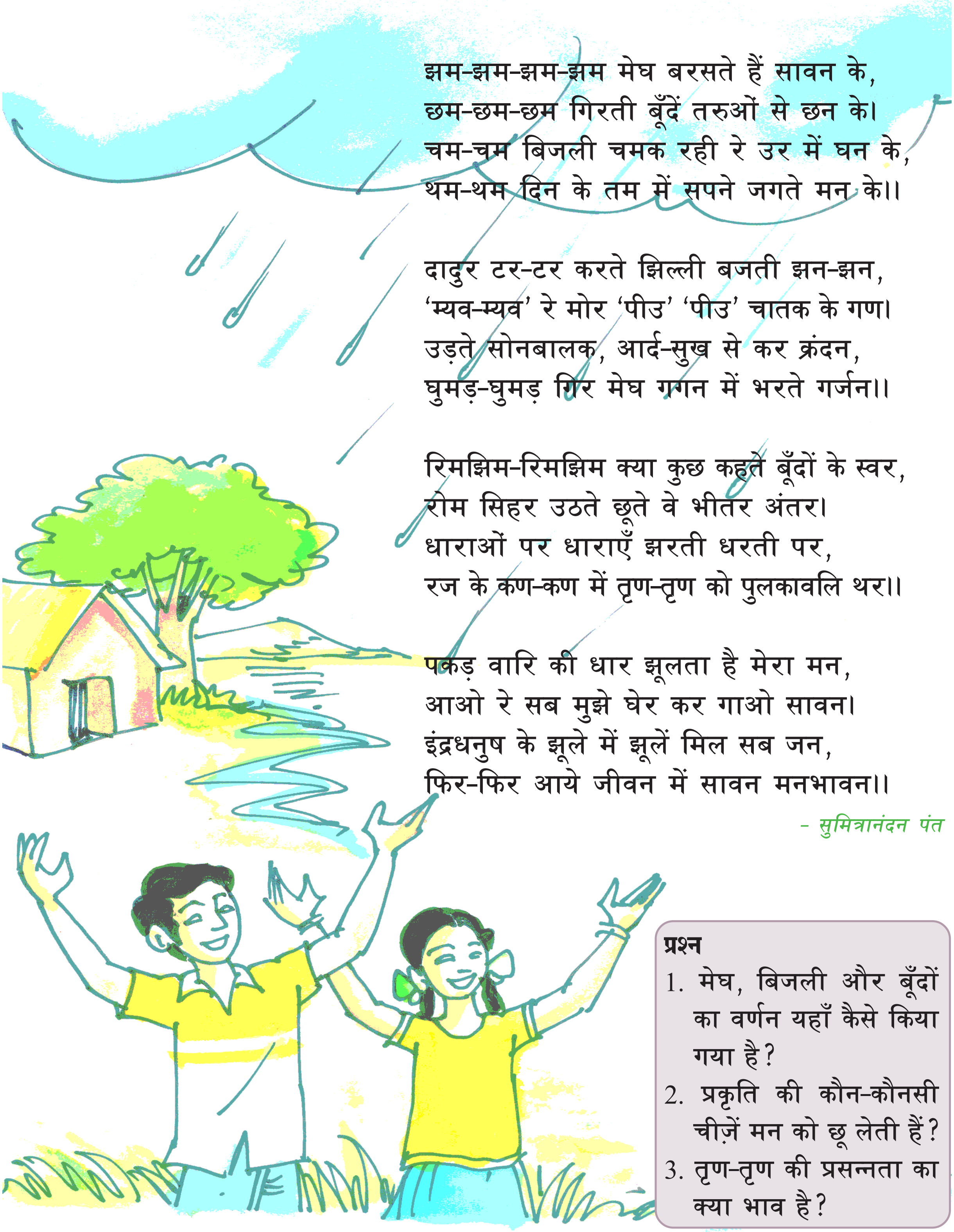

प्रश्न

1. मेघ, बिजली और बूँदों का वर्णन यहाँ कैसे किया गया है?
2. प्रकृति की कौन-कौनसी चीज़ें मन को छू लेती हैं?
3. तृण-तृण की प्रसन्नता का क्या भाव है?

 प्रकृति ईश्वरीय सृष्टि की सर्वोत्तम देन है, इसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। - सुंदरलाल बहुगुणा

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. धरती की शोभा का प्रमुख कारण वर्षा है। इस पर अपने विचार बताइए।
2. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(आ) वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. हैं झम-झम बरसते झम-झम मेघ के सावन।
2. गगन में गर्जन घुमड़-घुमड़ गिर भरते मेघ।
3. धरती पर झरती धाराएँ पर धाराओं।

(इ) नीचे दिये गये भाव की पंक्तियाँ लिखिए।

1. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा है।
2. मिट्टी के कण-कण से कोमल अंकुर फूट रहे हैं।
3. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार-बार आयें और सब मिलकर झूलों में झूलें।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बादल और बूँदें, बंद किये हैं बादल ने
अंबर के दरवाजे सारे, नहीं नज़र आता है सूरज ना कहीं चाँद-सितारे?
ऐसा मौसम देखकर, चिड़ियों ने भी पंख पसारे,
हो प्रसन्न धरती के वासी, नभ की ओर निहारे।।

1. इसने अंबर के दरवाज़े बंद कर दिये हैं-
   (अ) आकाश　(आ) सूरज　(इ) चाँद　(ई) बादल
2. पंख किसने पसारे हैं?
   (अ) चिड़िया　(आ) मौसम　(इ) धरती　(ई) सितारे
3. पद्यांश में आया युग्म शब्द है-
   (अ) बादल-अंबर　(आ) सूरज-चाँद　(इ) चाँद-सितारे　(ई) धरती-वासी
4. धरती के लोग किस ओर निहार रहे हैं?
   (अ) चिड़िया　(आ) नभ　(इ) बादल　(ई) चाँद
5. इस कविता का विषय है-
   (अ) प्रकृति　(आ) सूरज　(इ) तारे　(ई) अंबर

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है। कैसे?
2. वर्षा ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य पर अपने विचार लिखिए।

(आ) 'बरसते बादल' कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) प्रकृति सौंदर्य पर एक छोटी-सी कविता लिखिए।

(ई) 'फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन' ऐसा क्यों कहा गया होगा? स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. तरु, गगन, घन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. सावन, सपना, सूरज (एक-एक शब्द का तत्सम रूप लिखिए।)
3. गण, वारि, चंद्र (एक-एक शब्द का तद्भव रूप लिखिए।)
4. चम-चम, तृण-तृण, फिर-फिर (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) इन्हें समझिए और सूचना के अनुसार कीजिए।

1. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर। (अंतर स्पष्ट कीजिए।)
2. इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन।(अंतर स्पष्ट कीजिए।)
3. बादल बरसते हैं। (रेखांकित शब्द का पद परिचय दीजिए।)
4. मन को भाने वाला (एक शब्द में लिखिए।)
5. पेड़-पौधे, पशु-पक्षी (समास पहचानिए।)

(इ) रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और इस तरह के कुछ वाक्य बनाइए।

1. बरसते बादल अच्छे लगते हैं।
2. झरती धाराएँ सुंदर लगती हैं।
3. गिरती बूँदें छम-छम करती हैं।
4. बहता पानी शुद्ध होता है।
5. बढ़ता हुआ पौधा, खिलते हुए फूल, फैलती हुई सुगंध आदि अच्छे लगते हैं।

(ई) कविता की पंक्तियों पर ध्यान दीजिए और अलंकार समझिए।

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।

अलंकार शब्द का अर्थ है- आभूषण। किसी बात को साधारण ढंग से न कहकर चमत्कार व सौंदर्यपूर्ण ढंग से कहना ही अलंकार है।

इस कविता में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है। जब वाक्य में कोई अक्षर या शब्द बार-बार प्रयोग होता है तो वहाँ वाक्य का ध्वन्यात्मक सौंदर्य बढ़ जाता है। इस प्रकार का काव्य-सौंदर्य अनुप्रास अलंकार कहलाता है।

परियोजना कार्य

वर्षा, बादल, नदी, सागर, सूरज, चाँद, झरने आदि में किसी एक विषय पर प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए। कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।